ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December (Supplementary Issue)-2017
Innovation The Research Concept

गौरा देवी पंत 'शिवानी' की कहानियों में निहित आंचलिक तत्व

पौलिना पाण्डेय
प्राचार्या,
हिन्दी विभाग,
सेंट जेवियर कान्वेंट स्कूल,
व्हीकल, जबलपुर,
मध्य प्रदेश

सारांश

गौरा देवी पंत शिवानी जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से कहानियों में प्रमुख आंचलिक तत्वों को महत्व देते हुए स्त्री के स्वरूप को क्षेत्र– विशेष के रूप में उद्घाटित किया है। शिवानी जी ने अपने कथा – साहित्य में कुमाऊँ के जीवन को उतारा है। कुमाऊँ क्षेत्र की व्युत्पत्ति, शौर्य खण्ड, पौराणिक एवं स्थानीय देव खंड, कुमाऊँ की लोक गाथाएं, कुमाऊँ का साहित्य, लोक–कला, लोक–गीत, पूजा–पद्धति एवं कुमाऊँ के संस्कार आदि का उन्होंने पूर्णतः अवलोकन किया। साथ ही उन्होने अपनी कहानियों में उनके वास्तविक जीवन को यथार्थ से जोड़कर एवं सामान्य व्यक्ति के जीवन के करीब पहुँचाने का भरपूर प्रयास किया है।

मुख्य शब्द : साहित्य, इतिहास या संस्कृति

प्रस्तावना

शिवानी जी ने कुमाऊँ के इतिहास या संस्कृति की विशेषज्ञ होने का दावा न कर केवल उस संस्कृति के प्रति अपने सहज भावुक प्रेम के पत्र पुष्प मात्र अर्पित किया है। आंचलिक कहानियाँ एक ही प्रकार के परिवेश में क्षेत्र – विशेष का सत्य उद्घाटन करती है। वह पात्रों के स्थान पर क्षेत्र – विशेष की सम्पूर्ण सूचना जनसंख्या को लेती है।

अध्ययन का उद्देश्य

अंचल का प्रयोग किसी क्षेत्र या ग्राम के सीमान्त प्रदेश के लिये किया जाता है। आंचलिकता का अर्थ – विशेष के सत्य का उद्घाटन करता हुआ जीवन जो किसी एक परिवेश विशेष नहीं वरन उस खण्ड की समग्र क्षैत्रीयता का प्रतीक है। अंचल के भौगोलिक या सामाजिक, सांस्कृतिक सीमा – बद्ध विशेष क्षेत्र के सामान्य जीवन सत्यों का अंतर या एक रूपता का निदर्शन देश–काल, जाति–धर्म, भौगोलिक स्थिति, आर्थिक, सामाजिक प्रणाली, रीति–रिवाज के मनोवैज्ञानिक रहस्य के बीच स्थापित क्षेत्रीय, जीवन की स्वीकृति आंचलिकता को व्यक्त करती है।

भूमि राष्ट्र का शरीर है जन उसका प्राण है और जन की संस्कृति उसका मन है। शरीर, प्राण और मन इन तीनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र की आत्मा का निर्माण होता है।

"श्री वासुदेवशरण अग्रवाल"

साहित्यावलोकन

कुमाऊँ की अपनी अलग संस्कृति एवं सामाजिक– आर्थिक स्तर भी आंचलिकता को प्रदर्शित करता है।

"शिवानी जी ने कहानियों में पहाड़ी वर्णन में भाषा – बोली, वेश–भूषा का मुख्य व्याकरण किया है।

"पंलटनों को बाजो बाजन लागो।
झोला तम लोटा साजन लगो
ओ मेरी इजा, पकै दे खीरा
लड़ना सूँ जाछँ–कुमय्याँ बीरा।।"

'शिवानी' 'अपराधी कौन' 'अलख माई' पृ.सं. 39)

(पलट निया बाजा बजने लगा है, फौजी झोले – तुम लोटों से सजा वीर रण बाँकुरा युद्ध में जा रहा हैं – अरी मेरी माँ तु जल्दी खीर तो पका दे, तेरा कुमय्याँ वीर लड़ने को जा रहा है।)

पहाड़ी होली की मिठास को, कभी कोई और होली पा ही नहीं सकती। एक – एक आरोह, एक –एक अवरोह, मीठी मुरकियाँ, तोड़– मरोड़ सुनने वाले को अदृश्य अबीर–गुलाल से रंग रस–मत कर उठती है।

"अपनों वीरन् मोहे देरी न नदी।

में होली खेलने जाऊँ वृन्दावन।।

('शिवानी' 'भिक्षुणी', 'ज्यूडिथ से जयंती' पृ.सं. 20)

जटिल प्राकृतिक वनों ने यहाँ के जीवन को भी जटिल बनाया है। वैसे इन क्षेत्रों में वन तथा पहाड़ ज्यादा और कृषि योग्य जमीन कम मिलती है। यातायात की असुविधा ने इन्हें सभ्य संसार से दूर रखा हैं। अज्ञान के तहत यह भोले–जीव परंपरा और आडम्बरों का आस्था से पालन करते है। बनाये गये रीति–रिवाजों पर चलना, मुखिया–प्रधान और पुरोहित के प्रति अंधी– आस्था, वर्ष में एक बार वन–देवी की पूजा, यही उनका जीवन है। आजादी, शिक्षा, आधार इनसे यह लोग पूर्णतः बेखबर है।

शिवानी जी ने पहाड़ी–जीवन की व्याख्या में पहाड़ी नारी का जीवन–मात्र अत्यंत पिछड़ा शोषित एवं अभिशप्त बताने के लिये अनेकों कहानियों में पहाड़ो का वर्णन किया है। यहाँ कहा जा सकता है कि अंचल के ऐसे जीवन से साक्षात्कार होना, जिसमें पहाड़ी मनुष्य (मानव) का अस्तित्व पहाड़ों में ही छिपा रहताा है, न वह देश–दुनिया से मिलता–जुलता है और न ही उसे किसी भी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों सरोकार है। बल्कि पहाड़ों में ही अपने सम्पूर्ण जीवन के अंत तक जूझता है।

"यहाँ की प्राकृतिक छटा, ऐतिहासिक स्थानों और तीर्थों के सांस्कृतिक वैभव को लेखनी से उद्घाटित करना संभव नहीं। यह प्रदेश प्राकृतिक सौंदर्य की मंजूषा है, जिसमें जितनी ही बार हाथ डालों उतनी बार नवीन रत्न हाथ लगता है।"

कुमाऊँ सर–सरिताओं, पशु–पक्षियों, पुष्पों, ऐतिहासिक देवालयों और हिमाच्छादित श्रेणियों का प्रदेश है। बात–ही–बात में मर–मिटना, सहन–संतोष यहाँ के निवासियों की चरित्रगत विशेषता रही। यही कारण है कि यहाँ की संस्कृति और लोक–साहित्य में सहज माटी की सौधी–सुगंध रिसी – बसी है।

"शिवानी हे दत्तात्रेय" हिन्द पाकेट बुक्स, नवीन संस्करण 2000 , पृ.सं. 01

"शिवानी जी ने पहाड़ी–जीवन की व्याख्या में पहाड़ी नारी का जीवन मात्र अत्यंत पिछड़ा शोषित एवं अभिशप्त बताने के लिये अनेकों कहानियों में पहाड़ों का वर्णन किया है। पहाड़ का सौंदर्य प्रक्रति के बदलते स्वरूप से नारी के सौंदर्य की परिकल्पना की है।

सामाजिक स्तर

शिवानी जी ने कुमाऊँ की अपनी संस्कृति एवं सामाजिक आर्थिक स्तर को कहानियों में तत्कालीन समय में समाजिक स्तर को बखूबी से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अपनी अनेकों हुत ही मार्मिक रूप से स्त्री से अनेकों स्वरूपों में प्रस्तुत किया है।

उनकी कहानियों में नारी के चरित्र – चित्रण का स्वरूप हर दृष्टि कोण से इतना विस्तारित है कि सामान्य व्यक्ति भी आसानी से हर कहानी को बखूबी समझने एवं शिक्षा लेने में अग्रसर हो सकता है।

सामाजिकता के आधार पर एक अपराधिन चनुली जिसने गले का मंगलसूत्र और नाक की फुल्ली न उतारने की धृष्टता की थी इसी से नारी वर्ग ने उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया था।

"यह श्रृंगार क्या राँड–रंड–कुली औरत को शोभा देता है?वहाँ बुढ़िया बेटे के लिये पागल हो रही है, यहाँ इस मुई का यह चरित्रर है।

"शिवानी जा रे एकांकी" पृ.सं. 34–35

"पति अपने जानलेवा दौरों से लौटता, तो मानसिक तनाव से छुटकारा पाने, पत्नि को ले न जाने कहाँ–कहाँ घूमने निकल जाता। तुम्हे क्या कभी यह नही लगा कि तुम्हारा पति डाका डाल किसी की नृशंस हत्या कर ही तुम्हारे लिये साड़ी – गहने जुटा सका है।"

"शिवानी साधों ई मुर्दन के गांव" पृ.सं. 61

समाज में पुरूष प्रधानता का एकरूप कि – जिस दुर्बल हृदय, निवीर्य पुरूष ने उसे निर्ममता से फेंक दिया था, उस पर उसका विश्वास कितना अगाध था, कितना महान।

"शिवानी अनाथ" (भिक्षुणी), पृ.सं. 66

"शिवानी जी का ध्येय संदियों से अज्ञानता में डूबे, अविद्या अन्धकार में पड़े तथा अनेक अन्ध विश्वास से जकड़े लोगों को आत्म–सम्मानी, आत्म–विश्वासी, निर्भयी एवं आत्म–निर्भर बनाना था। जब अपने सामाजिक जीवन में ही हम पथभ्रष्ट पथिक बने बुरी तरह से आतंकित दिखाई दे रहे हैं तो साहित्यकार कैसे अछूता रह सकता है।

जीवन और यथार्थ अधिकतर ग्राम अंचलों का है। अंचल का जीवन पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर एवं उसी से संचालित मिलता है। यहाँ के जीवन में दिखावा कम यथार्थता अधिक देखने को मिली हैं।

आर्थिक स्तर

"शिवानी जी ने कहानियों में नारी के जीवन के समग्र रूप में आर्थिक स्तर कों भी महत्व देते हुए चरित्र–चित्रणों का हर कोंण से इतने सरल रूप में प्रस्तुत किया कि कुमाऊँ की अपनी अलग संस्कृति एवं सामाजिक, आर्थिक स्तर आंचलिकता कों प्रदर्शित करता है।

कुमाऊँ में जन–जीवन आर्थिक स्तर से साधारण ही था।

आज कुर्माचंल घरों का अनुशासन धीरे–धीरे बदलता जा रहा है।

आज लोग त्योंहारों में उपहार भेजने वालों के हृदय की गरिमा को नही तौलते, वे उपहारों की गरिमा तौलना सीख गए है।

यह तो संसार का चिरकाल से चला आया एक अदभुत नियम है कि जो कल था, वह आज नही है जो आज हैं, वह कल नही होगा। अगाध सम्पत्ति हो तो खान–पान, रहन–सहन में तामसिक पुट का आ जाना स्वाभाविक है। न उस जीवन में कपड़ों की ही ऐसी चमक – दमक , थी न फरमाइश। बड़े–भाई–बहनों की उतरन पहन कर ही बच्चे बड़े होते थे।

आज के सीमित परिवार, अपने ही इर्द–गिर्द एक अमित लक्ष्मण–रेखा खींच उसी में सिमट कर रह गए है। उन्हे चिन्ता है तो अपनी और अपने परिवार की। शायद

यह छूत भी हमें विदेश से ही लगा है। वसुधा अब कुटुम्ब के दायरे में नहीं रह गई है, किन्तु पहले ऐसा नहीं था।

"शिवानी जी के शब्दों में "कहा यह भी जाता है कि कभी कुमाऊँ में सोने की खाने थी। पता नही वे कहाँ और कब विलीन हो गई। फिर भी कुछ इने–गिने रईस रह गए थे। पहाड़ के समृद्ध ग्रहो में सोने के बड़े – बड़े नीबू ही संचित किए जाते थे, जैसे इस युग में सोने के विस्किट दुबई और कुबैत से लाकर संचित किये जाते है। किन्तु सोने की ईंट प्रत्येक ग्रह में भूले ही न हो, कुल की मर्यादा को सदा अक्षुण्ण रखा जाता था।

"शिवानी सुनहू बात यह अकथ कहानी" पृ.सं. 15

"दस साल में जोगी माई का शादी हुआ, चार साल बाद माई ससुराल गया। जब मालिक मोटर चलाकर घर आता नशा में चूर, जोगी माई को कभी सास मारता, कभी मरद। कभी कहता लकड़ी ला। 'कभी कहता घास काट ला'। कभी भूखा–प्यासा माई को भैंस चराने भेज देता जंगल।"

'अलख माई' 'शिवानी' 'अपराधी कौन' पृ.सं. 73–74

आर्थिक व्यवस्था से उत्पन्न अनेक सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का वर्णन इस वाक्य में बालक के संबंध में कही गई–"अभी तो वह छोटा है। बड़ा होगा, तब तुमसे अपने बाप की कैफियत माँगे, फिर क्या होगा?

'शिवानी' 'तीसरा बेटा'(पुतोवाली) पृ.सं. 136

समाज में दैनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं जीवन संघर्ष के मूल्य को प्रतिपादित कर समाज समाज की कमियों एवं अपवादों को दूर कर जीवन – स्तर कों सुधारने का प्रयास किया है।

भाषा में निहित आंचलिक तत्वों

भाषा में निहित आंचलिक तत्वों ने शिवानी की पृथक पहचान बनायी है।

क्षेत्रीय–जीवन को चित्रित करने का एवं अंचल–विशेष का चित्रण 'आंचालिक कहानी' का मुख्य उद्देश्य होता है। अंचल का जीवन पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर एवं उसी से संचालित मिलता है। यहाँ के जीवन में नदियों का स्थान देवी–देवता से भी कही ज्यादा पूज्यनीय होता है। प्राकृतिक जीवन, नारी जीवन और माननीय संवेदना की महत्वपूर्ण स्थितियाँ सदियों से साहित्य के इतिहास में देखने को मिली है।

अंचल विशेष पहाड़ी अंचल की भाषा परिवेश पूर्णता के साथ प्रस्तुत कहानियों में हुई है। लेखिका ने अपनी कहानी संग्रहों में पहाड़ी परिवेश के अभिशप्त नारी जीवन को मूल कथ्य के रूप में उठाया है। पहाड़ी नारी के जीवन को अत्यंत आत्मीयता और सूक्षता से साथ प्रस्तुतिकरण हुआ हैं।

'शिवानी' जी के अनुसार व्यक्तित्व को देखने – खोजने का अर्थ है, अंचल के सम्रग जीवन को बाहर और भीतर दोनों और से देखना, जीवन जितना बाहर है। उतना ही भीतर भी। अंचल अपनी भौगोलिक, आर्थिक ऐतिहासिक सांस्कृति एवं राजनैतिक विशेषताओं में अपने निवासियों में रूपायित होता है।

'शिवानी' जी ने अपनी भाषा में अंचल की समग्रता को शब्दाकार देने के लिये वहाँ की प्रकृति , वन्य जीवन,वेशभूषा रीति–रिवाज, सामाजिक–आर्थिक, स्थितियाँ विश्वास, धर्म भाषा आदि का प्रयोग आंचलिक रूप में किया है। उनकी अधिकांश कहानियों में आंचलिक भाषा का प्रयोग हुआ है। अंचल – विशेष के जीवन की गहराई में प्रवेश कर उसकी आंतरिक संवेदना, स्पन्दन एवं यथार्थ से सच्चा साक्षात् करके अंचल की कहानी में आंचलिक भाषा का प्रयोग विशेष रूप से विद्यमान है।

'शिवानी' जी की आंचलिक कहानियों में भाषा–तत्व इतना मुखर है कि अन्य तत्वों से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। कुछ आंचलिक कहानियों में तो भाषा को ही आंचलिकता का मुख्याधार मानकर चलाया गया है और सहजता तथा प्रमाणिकता की दृष्टि से कहानी की भाषा में स्थानीय भाषा और बोली का पुट रखा गया है।

"जा पोथी (लाडो) आपुंण चरयों भैर ठुंग में धर आ।"

'शिवानी माई' (करिए छिमा) पृ.सं. 28

"सन्ध्या निठाल होकर पूरे कमरे में प्रसवाक्लांत जननी–सी पसरी पड़ी थी।"

'शिवानी माई ' (करिए छिमा) पृ.सं. 35

"अपनों वीरन मोहे दे री ननदी।
मैं होली खेलने जाऊँ वृन्दावन।"

शिवानी 'भिक्षुणी' पृ.सं. 20

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट हैं कि ' शिवानी ' जी ने आंचलिकता को ग्रहण करते समय अपनी कहानी में या तो अंचल के भौगोलिक परिवेश के चित्रण पर ही बल दिया है या फिर अंचल की संस्कृति की व्याख्या सामाजिक – यर्थाथ के आधार पर की है। अंचल के ऐसे जीवन से साक्षात्कार होना जो कि पहाड़ी मनुष्य (मानव) का अस्तित्व पहाड़ों में ही छिपा रहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शिवानी– 'अपराधी कौन'–राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
2. *शिवानी – 'अपराजिता' –राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
3. *शिवानी – करिए छिमा –राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
4. *शिवानी –विप्रलब्धा–राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
5. *शिवानी –भिक्षुणी–राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
6. *शिवानी – पूतोवाली– राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2006*
7. *शिवानी–'सोने दे (आत्मकथा संस्करण) हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि. प्रथम संस्करण – 2001*
8. *शिवानी – हे दत्तात्रेय (कुमाऊँ की लोक संस्कृति) हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि नवीन सं. –2000*
9. *शिवानी – 'सुनहु तात यह अकथ कहानी (संस्मृतियाँ) हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि नवीन सं–1999*

पाद टिप्पणी

1. *'शिवानी' 'अपराधी कौन' 'अलख माई' पृ.सं. 39*
2. *'शिवानी' 'भिक्षुणी', 'ज्यूडिथ से जयंती' पृ.सं. 20*
3. *"शिवानी जा रे एकांकी" पृ.सं. 34–35*
4. *"शिवानी साधों ई मुर्दन के गांव" पृ.सं. 61*

5. *"शिवानी अनाथ" (भिक्षुणी), पृ.सं. 66*
6. *"शिवानी हे दत्तात्रेय" हिन्द पाकेट बुक्स, नवीन संस्करण 2000 , पृ.सं. 01*
7. *'अलख माई' 'शिवानी' 'अपराधी कौन' पृ.सं. 73–74*
8. *'शिवानी' 'तीसरा बेटा'(पुतोवाली) पृ.सं. 136*
9. *"शिवानी सुनहू तात यह अकथ कहानी" पृ.सं. 15*
10. *'शिवानी माई' (करिए छिमा) पृ.सं. 28*
11. *'शिवानी माई' (करिए छिमा) पृ.सं. 35*
12. *'शिवानी' भिक्षुणी' पृ.सं. 20*